02/08/19

(गद्य - खंड) पाठ - 3
श्यामाचरण दुबे

उपभोक्तावाद की संस्कृति

-: प्रश्नोत्तर :-

प्र०-1.> लेखक के अनुसार जीवन में 'सुख' से क्या अभिप्राय है ?

उ०-> लेखक ने समाज में बढ़ रहे उपभोक्तावाद पर चिंता व्यक्त की है। सुख पाने की होड़ में आज लोग उत्पादों पर निर्भर हो गए हैं। लोगों के लिए सुख की परिभाषा बदल गई है। लोग आंतरिक सुख से ज्यादा बाहरी दिखावे को ही सुख मानने लगे हैं। संसार एवं मानव के जीवन में अन्य प्रकार के सुख भी हैं, जैसे- शारीरिक, मानसिक और अन्य प्रकार के सूक्ष्म आराम। इन सभी को भी सुख की श्रेणी में रखकर इन्सान को मात्र उपभोक्तावाद से बचना चाहिए।

प्र०-2.> आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रही है ?

उ०-> इस सूक्ष्म बदलाव से मानव जीवन को बहुत नुकसान हो रहा है जो निम्नलिखित हैं :-

i) सामाजिक सरोकार कम होते जा रहें हैं। नैतिक मापदंड तथा मर्यादाएँ कमज़ोर पड़ती जा रही हैं।

ii) स्वार्थ की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिल रहा है।

iii) हम आधुनिकता के झूठे प्रतिमान अपनाते जा रहे हैं। प्रतिस्पर्धा बढ़ती जा रही है।

प्र०-3> लेखक ने उपभोक्ता संस्कृति को हमारे समाज के लिए चुनौती क्यों कहा है ?

उ०-> लेखक ने उपभोक्ता संस्कृति को हमारे समाज के लिए चुनौती इसलिए कहा है क्योंकि हमारी सांस्कृतिक अस्मिता खत्म होती जा रही है। पहले के लोग सादा जीवन - उच्च विचार का पालन करते थे। वे सामाजिकता तथा नैतिकता के पक्षधर थे। उपभोक्ता संस्कृति हमारी नींव हिला रही है और ये दुनिया, वर्तमान समाज और मानव के अस्तित्व पर एक बड़ा खतरा है।

प्र०-4 कोई वस्तु हमारे लिए उपयोगी हो या न हो, लेकिन टी - वी - पर विज्ञापन देखकर हम उसे खरीदने के लिए अवश्य लालायित होते हैं। क्यों ?

उ०-> टीवी पर दिखाए जाने वाले उत्पादों के विज्ञापन बहुत ही लुभावने तरीके से बनाए जाते हैं। ऐड बनाने वाले विज्ञापन में ऐसे दृश्य दिखाते हैं जिसकी वजह से हम उसे खरीदने के लिए लालायित हो उठते हैं। टीवी पर दिखाए गए विज्ञापनों में वस्तुओं के गुणों का बखना बढ़ा-चढ़ाकर किया जाता है।

प्र०-5-> आपके अनुसार वस्तुओं को खरीदने का आधार वस्तु की गुणवत्ता होनी चाहिए या उसका विज्ञापन? तर्क देकर स्पष्ट करें।

उ०-> किसी भी वस्तु को खरीदने का आधार उसकी गुणवत्ता होनी चाहिए। विज्ञापन में वस्तु के गुणों का अतिशयोक्तिपूर्ण बखान किया जाता है, उसके बारे में सच्चाई नहीं बताई जाती। वस्तु में जो गुण नहीं होते हैं उसे भी गिना दिया जाता है। जबकि वास्तविकता कुछ और ही होती है। विज्ञापन के चकाचौंध में उपभोक्ता फंस जाता है। इसलिए किसी भी वस्तु को खरीदने से पहले उसके गुण को अच्छी तरह जान लेना चाहिए।

प्र०-6-> पाठ के आधार पर आज के उपभोक्तावादी युग में पनप रही 'दिखावे की संस्कृति' पर विचार व्यक्त कीजिए?

उ०-> आज के उपभोक्तावादी युग ने समाज में दिखावे की संस्कृति को जन्म दिया है। बाजार में तरह-तरह की वस्तुएं भरी पड़ी हैं। जिनकी लुभावनी दुकान के बहार लगाई जाती है। इस चमक-दमक को देखकर लोग उस वस्तु को खरीदने पर विवश हो जाते हैं। पांच सितारा होटल में खाना और महंगे कपड़े पहनना, ये सब दिखावे का हिस्सा है। दिखावे की इस प्रवृत्ति से मनुष्य में आक्रोश और तनाव बढ़ रहा है।

प्र०-7-> आज की उपभोक्ता संस्कृति हमारे रीति-रिवाजों और त्यौहारों को किस प्रकार प्रभावित कर रही है? अपने अनुभव के आधार पर एक अनुच्छेद लिखिए?

उ०-> भारतीय समाज में तेजी से उपभोक्ता संस्कृति बढ़ रही है। इससे मनुष्य के मन ही नहीं हमारे रीति-रिवाज और त्यौहारों पर भी गहरा असर पड़ रहा है। उपभोक्तावाद से हमारे रीति-रिवाज और त्यौहारों में नकारात्मक बदलाव आए हैं।
जैसे-> रीति-रिवाज पहले के समय में रीति-रिवाज में पुरा परिवार शामिल होता था। सभी

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

साथ बैठ एक -दूसरे के संग
खुशियां बांटते थे। इससे अपनापन बना
रहता था। आज मनुष्य वस्तुओं में इतना
लिप्त हो गया है कि उसे अपने परिवार से
मिलने की भी फुर्सत नहीं रही है।
किसी के पास आने-जाने का समय नहीं है
बस मोबाइल उठाया और संदेश भेज
दिया।

6.8.19

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera